परिशिष्ट

साक्षात्कार

परिशिष्ट क्रं. 1

-: साक्षात्कार :-

(प्रस्तुत साक्षात्कार सूर्यबाला जी के निवास मुंबई (ठाणा) में संपन्न हुआ।)

सवाल 1 - सूर्यबाला जी आप अपनी पारिवारिक पृष्टभूमि के बारे में बताइए। आपका जन्म कब और कहाँ हुआ ?

- मेरा जन्म 25 अक्टूबर, 1944 को वाराणसी में हुआ।

सवाल 2 - आप किस वंश की है ?

- मैं कायस्थ हूँ।

सवाल 3 - आपका बचपन कहाँ बीता? आप की शिक्षा-दीक्षा के बारे में बताइए।

- मेरा बचपन और आरंभिक शिक्षा वाराणसी में हुई। मैंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से रीति साहित्य मे पी॰एच्.डी. की है।

सवाल 4 - आप अपने पारिवारिक स्थितियों के बारे में बताइए।

- मेरे पति श्री आर. के. लाल जहाज में चीफ इंजिनियर (मर्चंट नेव्ही) थे। उसके पश्चात् उन्होने ग्लैक्सो इंडस्ट्रीज में भी काम किया और अब वे सेवा-निवृत्त हो चुके हैं। मुझे अभिलाष, अनुराग नामक दो बेटे और दिव्या नामक एक बेटी है। मेरा बड़ा बेटा हाँगकाँग में कम्प्युटर का काम कर रहा है, इससे पहले उसने अमरिका में इंजिनिअरिंग पूरी की है। बेटी बायोकेमिस्ट्री में पी॰एच्.डी. कर चुकी है।

सवाल 5 - आपने कहीं नौकरी की है ?

- जी हाँ। मैंने बनारस विश्वविद्यालय, डिग्री कॉलेज में नौकरी की। लेकिन जब मेरे पति को ग्लैक्सो में नौकरी मिली तो मैंने नौकरी छोड़ दी और अब सिर्फ लेखन कार्य और गृहिणी की भूमिका निभा रही हूँ।

सवाल 6 - आप अपने व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं के बारे में बताइए जैसे आहार, व्यवहार, रूचि आदि -

- मैं जाति से कायस्थ होने के बावजूद भी शुद्ध शाकाहारी हूँ। मैं मध्यमार्ग का आहार पसंद करती हूँ। वैसे तो मेरी रूचियाँ बहुत सारी हैं लेकिन उनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं - पढ़ना, शास्त्रीय संगीत सुनना, शास्त्रीय नृत्य देखना, नाटक देखना। इसके साथ ही अपने लोगों के साथ सुख-दु:ख के बारे में ज्यादा

बाते करना और बूढ़े लोगों के साथ स्नेह के साथ बातें करना, उनको समझ लेना मुझे अधिक पसंद है। मेरा व्यक्तित्व करूणा, अवहास से युक्त होने के बावजूद भी मुझे हाजिरजवाबी कॉमेडी, व्यंग्य और विद्रूप में रूचि है। हालांकि मेरे व्यक्तित्व में उपर से बहुत खुलापन दिखाई देता है परंतु उससे ज्यादा मेरा अंतर्मन खामोश है। शायद इसका कारण यह रहा हो कि वसंत पंचमी के दिन मेरे पिता की मृत्यु हुई जिसका गहरा सद्मा मुझे पहुँचा है।

सवाल 7 - साहित्य लिखने की प्रेरणा आप को कब और कैसे मिली ?

- वैसे तो मैंने साहित्य लिखने की शुरूवात छटी कक्षा से ही शुरूवात की थी। फिर भी लेखक किसी एक वस्तु या घटना से प्रेरणा नहीं प्राप्त करता। मेरी रूचि बचपन से धीरे-धीरे विकसीत होती गयी। मैं आसपास घटित होनेवाली घटनाएँ, संपर्क में आनेवाले लोग इनसे प्रभावित होती गयी। शायद घर के माहौल ने मुझे ज्यादा प्रेरित किया क्योंकि मेरे पिता शिक्षा जगत से जुड़े थे। वे डिस्ट्रीक्ट इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल थे। इसी कारण कोर्स में लगी तमाम किताबे घर में थी। मेरी माँ भी एक गृहिणी रही और उसने उर्दू और हिंदी का अध्ययन किया था। मेरे पिताजी शेरो-शायरी करते थे, शायद इसका प्रभाव मुझ पर पड़ा। इसके साथ ही माँ की रूचि कलात्मक और साहित्यिक थी। लेकिन मुझ पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा मेरी बहन वीरबाला का। उन्होंने बचपन में मुझे प्रेमचंद और सुदर्शन की कहानियाँ सुनायी थी। शायद उनसे मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हो गयी और उनसे ही मैंने प्रेरणा प्राप्त की। माँ ने भी मुझे प्रेरित किया। अर्थाभाव के बावजूद भी उन्होंने हम चारों बहनों को पढ़ाया और चारों बहनों ने एम्.ए.पीएच्.डी. किया।

सवाल 8 - आपने कविता, नाटक ये विधाएँ छोड़कर कथा साहित्य लिखना क्यों पसंद किया ?

- साहित्य में कौन-सी विधा चुननी है यह कोई भी रचनाकार सोच कर नहीं निर्णय लेता। प्राय: लिखते हुए कलम खुद-ब-खुद अपनी विधा चुन लेती है। वैसे प्राय: हर रचनाकार अपने लेखन की शुरूवात कविता से ही करता है। मैंने भी छ:-सात वर्ष की आयु में पहली कविता लिखी थी। लिखना तो तब ठीक से आता भी नहीं था। मैंने रची। यों उसे कविता से ज्यादा 'तुकबंदी' कहना ही ठीक होगा।

कविता में संपूर्ण यथार्थ शायद नहीं आ पाता। कल्पनाशीलता और शिल्पगत अलंकरण का

भी गद्य की अपेक्षा ज्यादा दबाव रहता है। कथा रचना में मैंने ज्यादा मुक और सहज महसूस किया। शायद कहने, रचने के लिए मेरे पास उस छोटी उम्र में भी जितने प्यार, अपनापे के साथ संघर्ष के भी अनुभव थे, वह एक कविता में समा पाना कठिन था।

सवाल 9 - अपने कथा साहित्य के अलावा अन्य साहित्य के बारे में बताइए। क्या आपकी किसी कृति को पुरस्कार मिला है ?

- मेरी सबसे पहली कहानी 'जीजी' सन् 1972 में 'सारिका' पत्रिका में छपी जब कि मार्च 1973 में 'धर्मयुग' पत्रिका में 'अविभाज्य' नामक व्यंग्य छपा। मेरे दो व्यंग्य संग्रह है - 'अजगर करे न चाकरी' वह प्रकाशित व्यंग्य संग्रह है तो 'अगली सदी का शोधपत्र' यह प्रकाश्य व्यंग्य संग्रह है। मुझे सितंबर 1996 में 'प्रियदर्शनी पुरस्कार' मिल चुका है। 'कात्यायनी संवाद' के लिए घन:श्यामदास सराफ पुरस्कार मिला है। इसके अलावा नागरी प्रचारिणी सभा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मुंबई विश्वविद्यालय आरोही संस्था, राष्ट्रीय कायस्थ सभा आदि के द्वारा मुझे सम्मानित किया जा चुका है।

सवाल 10 - आप की कहानियों में नारी-मनोविज्ञान की अधिकता क्यों दिखाई देती है ?

- मैंने अन्य लेखिकाओं की तरह सिर्फ नारी के दु:ख -सुख या स्त्री शोषण को ही अपने साहित्य का विषय नहीं बनाया। नारी और पुरूष दोनों की समस्याओं को लिया है। मेरी समझ से आज की नारी के लिए यह समझना बहुत जरूरी है कि वह दरअसल चाहती क्या है ? और उसको पाने का तरिका क्या होना चाहिए ? आज सभी ज्यादा नारी के आर्थिक आत्मनिर्भरता की बातें करते हैं। निश्चित रूप से आर्थिक आत्मनिर्भरता उसे आराम और सुविधा दे सकती है, उसकी भौतिक जरूरतों की पूर्ति तो कर सकती है लेकिन भावनात्मक जरूरतों का क्या होगा ? क्या स्नेह, प्यार, आदर, सुरक्षा यह सब पैसा नही दे सकता।

पाश्चात्य देशों में पैसा बहुत हो गया है लेकिन मनोचिकित्सालय, पागलखाने और तलाक उतनी ही मात्रा में बढ़ गये हैं। तो क्या नारी सुखी है ? आज यह सोचना बहुत जरूरी है कि मानवीय रिश्ते, मूल्य, परंपराएँ इनमें से क्या लेना और क्या छोड़ना है ? आधुनिक बातों को हम स्वीकार करते चले जा रहे हैं, उसमें भी विवेक का होना अत्यंत आवश्यक है। इसी कारण आज के आदमी का लेने

और छोड़ने के बीच द्वंद्व ही मेरा प्रिय विषय रहा है।

सवाल 11 - आज कल आप क्या लिख रही है ?

- आज कल मैं कुछ कहानियाँ लिख रही हूँ। इसके साथ ही दो उपन्यासों पर मेरा काम चल रहा है।

सवाल 12 - साहित्य निर्मिती और पारिवारिक जिम्मेदारी निभाते वक्त लेखिका सूर्यबाला और पत्नी सूर्यबाला इनमें से कौन किस पर हावी हो जाता है ?

- पिछले पचास सालों से नारी में परिवर्तन हो गया है। आज समाज में स्त्री पर दुगूना दबाव होता है। वह बाहर जानेपर भी घर को छोड़ नही सकती। घर ही उसके अंदर रहता है लेकिन निश्चीत रूप से जब हम लिखते होते हैं तो बिल्कुल अलग व्यक्ति होते हैं। हमारा कायाकल्प हो जाता है। जो जीवन के साथ न्याय नहीं कर पाया वह साहित्य के साथ भी नही कर पाता।

मैं आम गृहिणियों की तरह सभा संगोष्ठियों में नहीं जाती। घर में रहकर ही साहित्य लेखन एकाग्रता की माँग करता है। इसी कारण मैंने पत्नीऔर माँ का दायित्व निभाते वक्त उसपर लेखिका को हावी न होने दिया।

स्थान - मुंबई (ठाणा)

तिथि - 30 मई, 1999

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संदर्भ ग्रंथ-सूची

(अ) आधार ग्रंथ

सूर्यबाला के कहानी-संग्रह

	कहानी संग्रह	प्रकाशक	संस्करण
1.	थाली भर चाँद	प्रभात प्रकाशन चावडी बाजार, दिल्ली - 6	प्रथम, 1988
2.	मुंडेर पर	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस 23, दरियागंज, नयी दिल्ली -2	प्रथम, 1990
3.	यामिनी कथा	ज्ञानगंगा 205-सी, चावडी बाजार, दिल्ली-6	प्रथम, 1991
4.	गृह प्रवेश	ग्रंथ अकादमी 1686, पुराना दरियागंज, नई दिल्ली-2	प्रथम, 1992
5.	साँझवाती	किताबघर 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2	प्रथम, 1995

(ब) संदर्भ ग्रंथ

	ग्रंथ कर्ता	ग्रंथ का नाम	प्रकाशक	संस्करण
1.	कुमार सरिता	महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप-विकास	राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज,दिल्ली - 2	प्रथम, 1983
2.	कुमार जैनेंद्र	साहित्य का श्रेय और प्रेय	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम, 1953
3.	गुप्त(डॉ.)शांतिस्वरूप	उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प	लोधी ग्रंथ निकेतन, दिल्ली - 6	प्रथम, 1980
4.	टंडन(डॉ.)प्रतापनारायण	हिंदी कहानी कला	हिंदी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश लखनऊ	प्रथम, 1970
5.	वही,	हिंदी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास	हिंदी साहित्य भांडार लखनऊ	प्रथम, 1959
6.	देसाई (डॉ.) बापूराव	हिंदी व्यंग्य एवं व्यंग्यकार	विनय प्रकाशन 70, पशुपतिनगर, नौबस्ता कानपूर - 208021	प्रथम, 1997

7.	तिवारी (डॉ.) रामचंद्र	हिंदी का गद्य साहित्य	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी	तृतीय, 1992
8.	पाटील (डॉ.) पांडुरंग	देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास	क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर	प्रथम, 1998
9.	बाबर (डॉ.) सुरेश	भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन	अन्नपूर्णा प्रकाशन साकेतनगर, कानपुर	प्रथम, 1997
10.	वर्मा (डॉ.) शीलप्रभा	महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ	विद्याविहार गांधीनगर कानपुर - 12	प्रथम, 1987
11.	संधु (डॉ.) मधु	साठोत्तर महिला कहानीकार	सन्मार्ग प्रकाशन 16, यु.बी, बैंग्लो रोड, दिल्ली - 7	प्रथम, 1984

(क) पत्र-पत्रिकाएँ

	संपादक	पत्रिका	प्रकाशन-तिथि	प्रकाशन-स्थल
1.	गोपाल राय	समीक्षा	अप्रैल, 1991	प्रोफेसर क्वार्टर्स, रानीघाट, पटना - 6
2.	वही,	वही,	मार्च, 1995	वही,
3.	वही,	वही,	अक्टूबर, 1996	राजा बाजार, बेली रोड पटना - 800014
4.	वि. सा. विद्यालंकार	प्रकर	मई, 1992	ए-8/42, राणा प्रताप बाग दिल्ली - 110007
5.	वही,	वही,	दिसंबर, 1993	वही,
6.	वही,	वही,	अप्रैल, 1995	वही,

	समीक्षक	पत्रिका	प्रकाशन-तिथि	प्रकाशन-स्थल
1.	मयंक हृदयेश	जनसत्ता (सबरंग)	12 अप्रैल, 1997	मुंबई
2.	विभारानी	वही,		वही,